जूलय १९८९ हिंदी पत्रिका में प्रकाशित

धर्म प्रसार सम्मेलन

धम्मगिरि (१ से ५ मार्च, १९८९)

सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए आचार्य श्री गोयन्काजी द्वारा भगवान् बुद्ध के संदेश को पुनः प्रख्यापित किया गया धर्म का प्रसार 'बहुजनहिताय, बहुजनसुखाय' किया जाना चाहिए। इस सन्देश से प्रेरित होकर सम्मेलन में आए हुए सभी लोग धर्म-प्रसार के विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श करने के लिए जुट गए।

पहले दिन विपश्यना से सम्बन्धित विश्व की १४ संस्थाओं के प्रगति प्रतिवेदन पढ़े गये। इनसे स्पष्ट हुआ कि ये सभी उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर आरूढ़ हैं। भारत में युवा वर्ग और व्यावसायिक लोग पहले की अपेक्षा शिविरों में अधिक संख्या में भाग लेने लगे हैं, जो धर्म-प्रसार की दिशा में एक शुभ लक्षण है। फ्रांस तथा न्यूजीलैंड और भारत (कलकत्ता में) नए केन्द्रों की स्थापना हुई है। जापान, क्वींसलैंड (ऑस्ट्रेलिया) तथा वीरगंज (नेपाल) में भी केन्द्र स्थापित हो रहे हैं। ऑस्ट्रेलिया के वर्तमान केन्द्र में चैत्य के निर्माण कार्य की योजना बननी आरम्भ हो गयी है।

तत्पश्चात् गत वर्ष के सम्मेलन में लिये गये निर्णयों की क्रियान्विति का सिंहावलोकन किया गया। इससे पाया गया कि विभिन्न केन्द्रों के बीच धर्म से सम्बन्धित सामग्री के आदान प्रदान हेतु 'धम्मधरा'(यु.एस.ए) में 'नेटवर्क' की स्थापना हो चुकी है। वही पर शिविरों के विधिवत् संचालन के लिए एक मार्गनिर्देशिका भी तैयार की गई जो अब 'धम्मगिरि' पर भी उपलब्ध है। भारत में तीन विषयों पर निर्देशिकाएं तैयार की गई हैं –

(१) केन्द्रों का विकास (२) केन्द्रों पर शिविरों का आयोजन और (३) केन्द्रों से बाहर शिविरों का आयोजन। सहायक आचार्य के लिए अनुशासन-संहिता का प्रारूप तैयार करने का काम प्रगति पर है। 'अन्तर्राष्ट्रीय विपश्यना असोसिएशन' के गठन के लिए भी प्रस्ताव का प्रारूप तैयार किया जा रहा है। शिविरों के मूल्यांकन के लिए एक प्रश्नावली नए सिरे से विकसित की जाएगी। बच्चों के शिविरों के लिए तैयार की जा रही मार्गनिर्देशिका को पूज्य गुरुजी द्वारा मई १९८९ में संचालित किए जाने वाले शिविरों के बाद अन्तिम रूप दिया जाएगा। सभी को नव-सृजित धर्म-साहित्य की जानकारी भी दी गई (उक्त सभी प्रस्तावित कार्य पूरे हो गए हैं।)

सायंकालीन सत्र में बच्चों के शिविरों के बारे में अनुभव-प्राप्त सहायक आचार्यों ने अपने-अपने अनुभवों की जानकारी दी।

दूसरे दिन सहायक आचार्यों ने एक पृथक बैठक में शिविर संचालन के समय अपने-अपने अनुभवों का आदान-प्रदान किया।एक अन्य बैठक में विभिन्न केन्द्रों के ट्रस्टियों तथा प्रबन्धकों और धर्मसेवकों ने धर्मप्रसार के कार्य में आने वाली समस्याओं के विभिन्न पहलुओं पर विचार किया।

इसके बाद के सत्रों में निम्नांकित विषयों के लिए घठित समितियों ने आपसी विचार-विमर्श द्वारा अपने-अपने सुझाव-पत्र तैयार किए---

(१) शिविर सामग्री का अनुवाद (२) धर्म-साहित्य का सृजन/अनुवाद, (३)भावी शिविरों का कार्यक्रम, (४) केन्द्रों पर भवन-निर्माण, (५) शोध-कार्य एवं मूल्यांकन, (६) फॉर्मों में सुधार।

तीसरे दिन पूज्य गुरुजी ने सम्मेलन में भाग लेने वाले व्यक्तियों द्वारा पूछे गए प्रश्नों का समाधान किया। एक पृथक् बैठक में विभिन्न संस्थाओं के ट्रस्टियों ने अपनी-अपनी संस्था के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान कर एक-दूसरे को लाभान्वित किया। इससे पाया गया कि एक दूसरे से अनियन्त्रित होते हुए भी ये संस्थाएं पूज्य गुरुजी द्वारा समय समय पर दिये गए दिशा-निर्देशों के अनुरूप ही कार्य कर रही हैं।

सायंकालीन सामान्य सत्र में पूर्व-वर्णित समितियों के अनुशंसा -प्रतिवेदन पढ़े गए जिससे सभी को नये वर्ष के लिए प्रस्तावित कार्यक्रमों की जानकारी प्राप्त हुई।

चौथे दिन पूज्य गुरुजी ने सभी लोगों के एक सामान्य सत्र को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किया कि मैं लगभग २० वर्षों से अपने आचार्य, स्व.सयाजी ऊ बा खिन, द्वारा मुझे सौंपे गए धर्म को प्रकाशित करने के दायित्व का वहन कर रहा हूं। मुझे बड़ा आश्चर्य होता है कि धर्म कैसे बढ रहा है? कैसे हजारों की संख्या में लोग खिंचे चले आ रहे हैं। धर्म सेवा देने के लिए कितने लोग आगे आए हैं। इतनी कठिनाइयों के होते हुए भी लोग कैसे इस कार्य को आगे बढ़ा रहे हैं। ये धर्मपुत्र, ये धर्मपुत्रियां धर्म-प्रसार के कार्य में मेरा हाथ बटा रहे हैं। यह सब कैसे होता चला जा रहा है?

आप सब ने धर्म का रस चखा है। सब रसों से बढ़ कर है धर्म का रस। इसे चखने के बाद मन में उमंग जागती है कि कैसे अधिक से अधिक लोग इसके सम्पर्क में आएं। सब प्रकार के दानों से बढ़ कर है धर्म का दान।

जो कोई धर्मप्रसार के कार्य में लगे हैं उन्हें स्पष्ट होना चाहिए कि उनकी वजह से धर्म का प्रसार नहीं रहा है। धर्म का प्रसार इसलिए होने लगा है क्योंकि इसका समय पक गया है। चारों ओर दुःख ही दुःख छाया हुआ है। इसलिए धर्म का तो उदय होना ही है –इस समय इसकी दरकार है। लोगों को उनके दुःखो से उबारने के लिए और कुछ कारगर हो नहीं सकता। इसका एक मात्र उपाय धर्म ही है। जब चारों ओर इतना गहन अन्धकार छाया हुआ हो तो प्रकाश की नितान्त आवश्यकता रहती है। जब चारों ओर अथाह क्लेश छाया हुआ हो तो धर्म की भी नितान्त आवश्यकता रहती है।

मुझे भविष्य बड़ा उज्ज्वल दिखाई देता है –उनके लिए जो सेवा दे रहे हैं तथा उनके लिए भी जो सेवा पा रहे हैं। बस, धर्म को शुद्ध रखें –नितान्त शुद्ध –परिशुद्ध। यही एक आधारशिला है जिस पर प्रतिष्ठापित हुआ धर्म फैलता चला जाएगा – सदियों तक!

भवतु सब्ब मंगलं